

ओ३म्

प्यारा ऋषि

महर्षि दयानंद सरस्वती



महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन की
प्रेरणाप्रद घटनाओ पर आधारित चित्रकथाएं

(प्यारा ऋषि)

गाली देने वाले पर दया

एक बार स्वामीजी कानपुर में प्रवचन कर रहे थे और श्रद्धालु भक्तगण श्रद्धापूर्वक सुन रहे थे। उनमें एक व्यक्ति ऐसा भी था जो नियमपूर्वक स्वामीजी के प्रवचन स्थल पर पहुँच कर गालियाँ दिया करता था।



ईश्वर का मुख्य नाम ओ३म् है! वह सच्चिदानन्द स्वरूप है।

यह स्वामी नहीं, बहुत बड़ा ढोंगी है। इसे कोई ज्ञान-योग नहीं आता, केवल लोबों को मूर्ख बनाना आता है।



स्वामीजी उस व्यक्ति की बातों पर कोई ध्यान न देकर सुना-अनसुना कर दिया करते थे।

श्रद्धालु भक्तगण स्वामीजी के लिए फल-मिठाई ले आया करते थे। और वह उसे लोगों में बांट दिया करते थे। एक दिन ऐसा हुआ कि फल तथा मिठाई अधिक मात्रा में होने से लोगों को बांटने के बाद भी बच गये। स्वामीजी सोच रहे थे—

आज तो फल
और मिठाई कुछ
ज्यादा ही बच गये हैं,
यह कैसे दिया जाय?

...तभी वह गाब्रियों देने
वाला व्यक्ति अपने
नियमपूर्वक वहाँ आया...

...स्वामीजी ने उसे बुलाकर सब पदार्थ उसे
दे दिये, और कहा कि—

शोज आया करो। और
फल व मिठाई ले
जाया करो।

एक दिन उसकी आत्मा ने उसे धिक्काया। वह
स्वामीजी के चरणों में गिर कर कहने लगा—

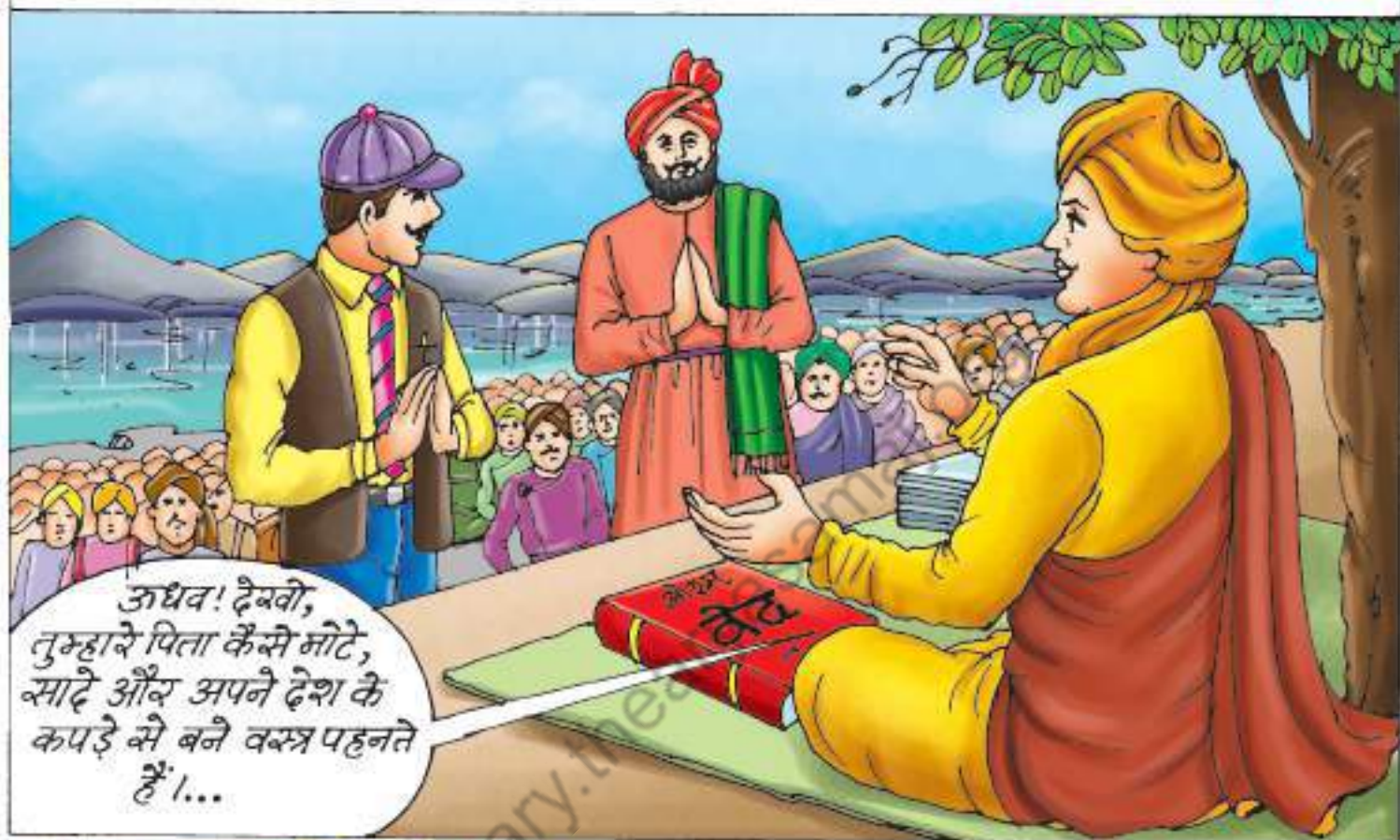
स्वामीजी! यदि मैरी
दुष्टता का पाव नहीं,
तो आपकी सज्जनता
की भी कोई सीमा...
नहीं। मेरा अपराध
क्षमा कीजिये।

जब
तुम्हारी गाब्रियों को हमने
अपनी कृति में कोई स्थान
ही नहीं दिया, तब तुम्हें उसके
कारण दुःखी नहीं होना चाहिए।

वह भी शोज आकर फल व मिठाई ले जाने लगा।

स्वदेशी ही वस्तु अपनाने में शोभा

एक बार स्वामीजी अलीगढ़ में प्रवचन दे रहे थे। तभी 'ठाकुर उधोसिंह' छावली निवासी अपने पिता ठाकुर भूपाल सिंह के साथ स्वामीजी के दर्शन करने आये। उस दिन उधोसिंह के वस्त्र नये ढंग के थे और सब के सब विलायती कपड़े के बने थे। यह देख स्वामीजी बोले—





... और घर पहुँचते ही उन्होंने विदेशी वस्त्रों को उतार फेंका और स्वदेशी वस्त्र धारण कर लिए।

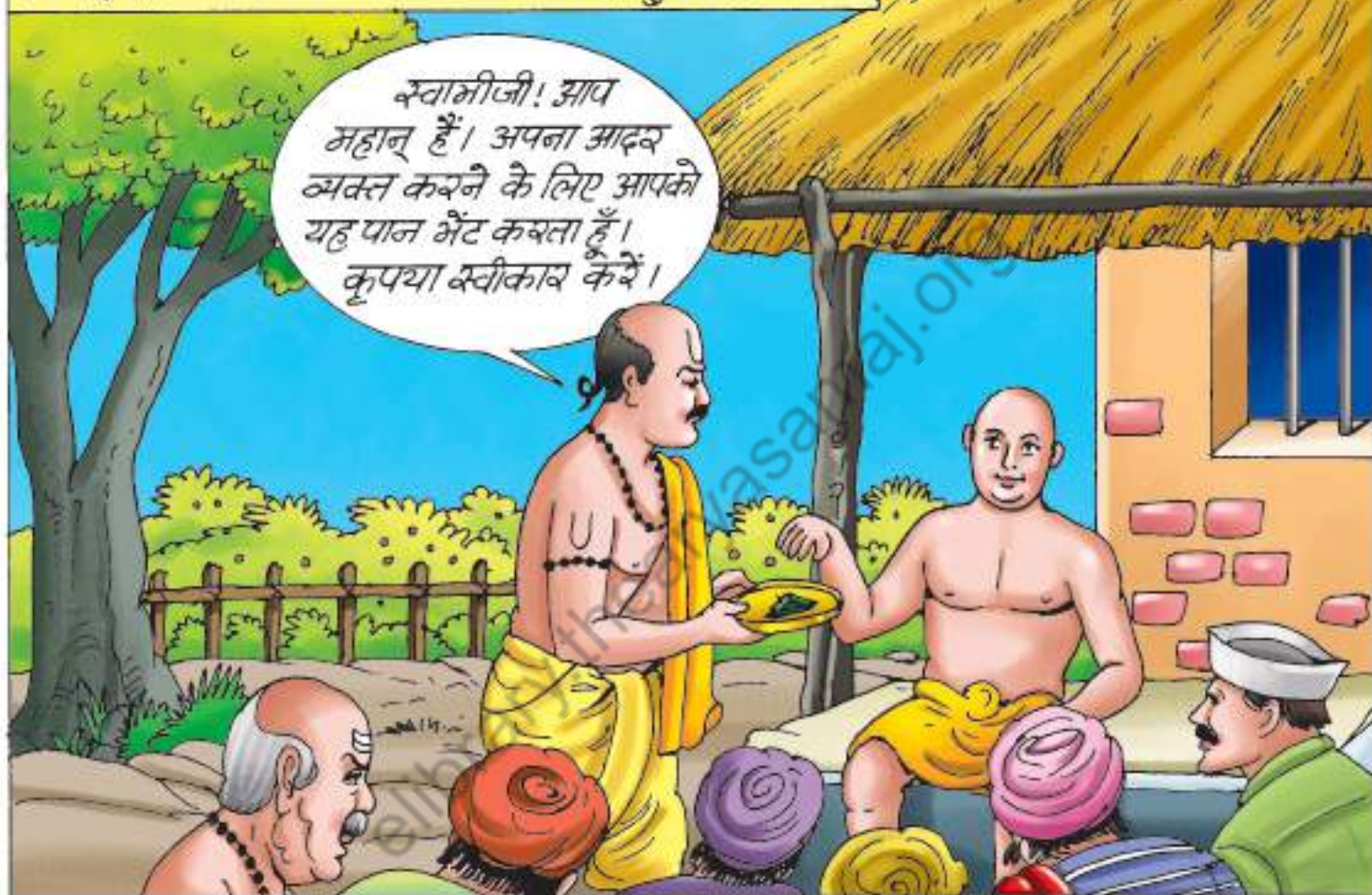


जहर देने वाले की कैद से मुक्ति

स्वामीजी सभी वर्ग के लोगों के बीच
समान रूप से उठते-बैठते थे। इसमें
पंडित व समाज के अन्य लोग स्वामी
दयानन्द सरस्वतीजी से बेहद क्रीडित थे।

एक दिन एक पंडित ने स्वामीजी को पान देते हुए कहा—

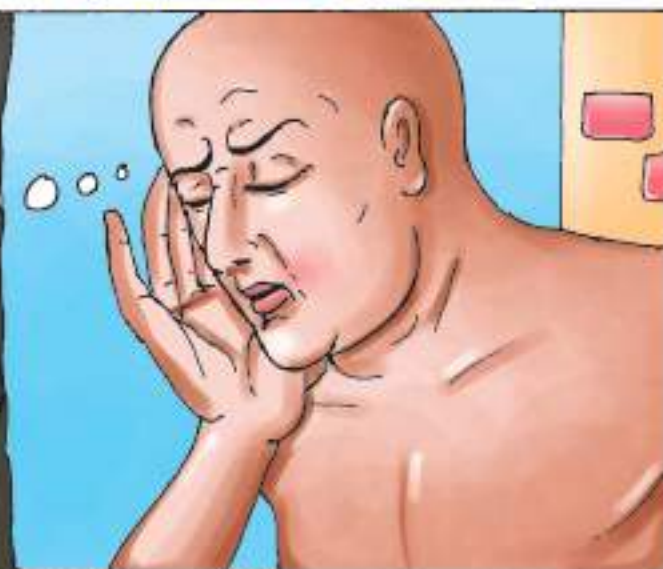
स्वामीजी! आप
महान् हैं। अपना आदर
व्यक्त करने के लिए आपकी
यह पान भेंट करता हूँ।
कृपया स्वीकार करें।



पान खाने के थोड़ी देर बाद—

हे भगवान् !
लगता है, इस पान
में जहर था।

फिर स्वामीजी ने योगिक क्रियाओं के द्वारा पेट का
समस्त भोजन वमन कर दिया और अपने आप
को जहर के प्रभाव से बचा लिया।



स्वामीजी की हत्या के इशारे से पान में जहर देने वाले अपराधी को शहर के तहसीलदार सय्यद मोहम्मद ने जो स्वामीजी के भक्त बन गये थे कैद कर लिया।

अरे, बेशर्म! स्वामीजी
जैसे महापुरुष को तुने
धोखे से जहर दिया,
जो आज तुम्हारे हिन्दु
धर्म के सबसे बड़े
रक्षक हैं।

इसे, स्वामीजी
के पास ले
चलो।

जहर देने वाले अपराधी को जब स्वामीजी के सामने लाया गया—

तहसीलदार सय्यद साहब! इसे
छोड़ दें। मैं तीनों लोगों को मुक्त कराने
आया हूँ फिर इसे बंधन में कैसे
डलवा दूँ?

वाह! स्वामीजी,
जैसा आपका नाम है,
वैसे ही आपके गुण हैं। आप
दया के सागर हैं

उपासना धर्म का निरादर

एक दिन स्वामीजी आर्य-समाज के साप्ताहिक सत्संग में पहुँचें, उस समय उपासना हो रही थी। स्वामीजी की आला देवकर...



...सभी सत्संगी स्वामीजी के सम्मान में खड़े हो गये।

उपासना की समाप्ति पर स्वामीजी ने उपदेश दिया कि—



... उपासकों को बड़ा नहीं होना चाहिये। क्यों कि परमेश्वर से बड़ा कोई नहीं है। ऐसा करने से उपासना धर्म का निरादर होता है।

ओ३म्
आर्य समाज सत्सङ्ग सभा
(बाहौर)

महर्षि की इस बात को सबने स्वीकार किया और उनकी इस महानता से सब बहुत प्रभावित हुए।

तब तो रीछ बड़ा त्यागी है

एक दिन बम्बई में स्वामीजी क्षौर
करा रहे थे। एक सज्जन ने वहाँ
आकर स्वामीजी से सवाल किया—

संन्यासियों
का धर्म तो
त्याग है, फिर
आप...

...देह-
विभूषा में
क्यों लगी
है ?

स्वामीजी ने हँसते हुए उत्तर दिया—

अगर बाल
बढ़ाने में ही त्याग
है, तब तो रीछ
सबसे बड़ा त्यागी
हुआ ।

यह कहकर स्वामीजी ने उस सज्जन की उपदेश दिया कि—

देह रक्षा के लिए उसे सँवारना
कौई पाप नहीं है। जो पुरुष
परीपकारी है;...



... उन्हें अपनी देह
की रक्षा करना अति-
आवश्यक है, ताकि वह
उपकार-कार्य अच्छी
प्रकार से कर सकें।



सेवा का भाव

भडौंच में स्वामीजी के साथ पण्डित कृष्णराम भी रहते थे। एक दिन पण्डित कृष्णराम को बुखार आ गया। स्वामी दयानन्दजी स्वयं उनका सिर दबाने लगे।

तभी पण्डित कृष्णराम जी बोले—

स्वामीजी !
यह आप क्या कर रहे हैं, मैं आपसे कैसे सेवा करा सकता हूँ ?



स्वामीजी ने हँसकर जवाब दिया—

पण्डित जी ! दूसरों की सेवा करना मनुष्य का धर्म है। यदि बड़े छोटी की सेवा न करेंगे, तो छोटी में सेवा का भाव कैसे आयेगा ?



मनुष्य की दूसरों की सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए।

सर सय्यद अहमद खां और हवन

अलीगढ़ में एक दिन सर सय्यद
अहमद खां स्वामीजी से मिलने
गये और कहने लगे—

स्वामीजी! आपकी
अन्य बातें तो युक्ति संगत हैं,
पर यह सभक में नहीं आता
कि थोड़े से हवन से वायु
का सुधार कैसे हो
सकता है ?

स्वामीजी ने कहा—

जैसे थोड़े से बघार
(छोँक) से शारी दाव
सुवासित हो जाती
है और...





ब्रह्मचर्य का बल

शक्ति मानसिक हो या शारीरिक, दोनों का स्थान हमारे जीवन में महत्वपूर्ण है। स्वामीजी अद्भुत बल के धनी थे, उन्होंने एकबार दो साँड़ों को लड़ते हुए छुड़ाया—

चलो!
परहेटो।



ब्रह्मचर्य की शक्ति से ही कीचड़ में फंसी बैलगाड़ी निकाली।



ईंट मारने वालों को लड्डू

अमृतसर में एक बाल-पाठशाला के अध्यापक
ने एक दिन अपने छात्रों से कहा—

बच्चों ! आज हम सब स्वामीजी
की कथा में चलेंगे। तुम अपनी भोलियों
में ईंट, शेंड़े और पत्थर भरकर मेरे साथ
चलना। जब मैं संकेत करूँ, उसी समय
तुम कथा कहने वाले पद...



...ईंट, शेंड़े और पत्थर
फेंक देना, मैं तुम्हें लड्डू
दूँगा।

जी,
गुरुजी!



अबोध बालकों ने ईंट, शेंड़े और पत्थरों से अपनी
भोलियां भर लीं, और अध्यापक के साथ चल पड़े।

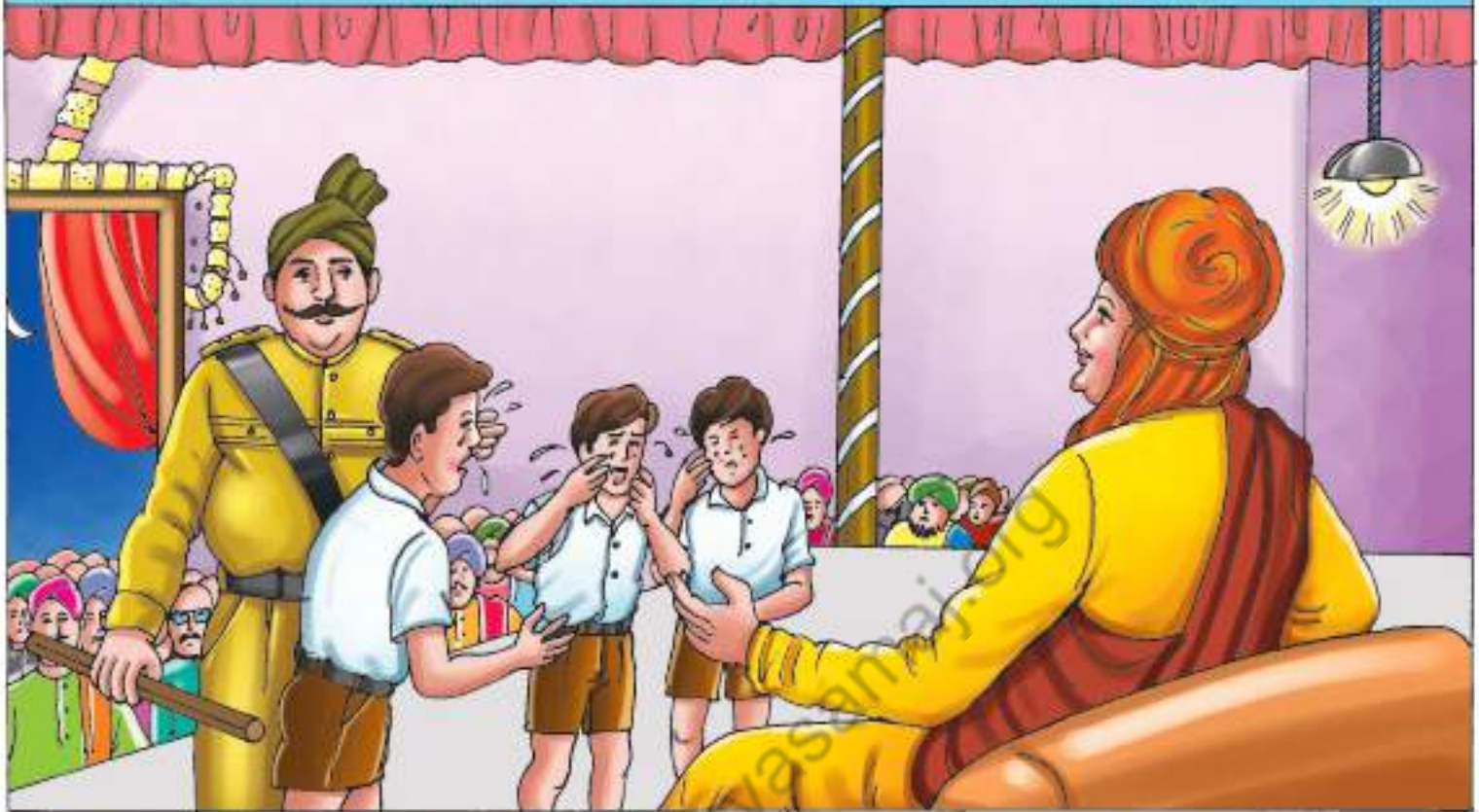
व्याख्यान शत्रि के आठ बजे समाप्त हुआ करता था। जब थोड़ा अँधेरा होने लगा तब अध्यापक का संकेत पाकर बालक स्वामीजी पर ईंट, शेंड़े और पत्थर फेंकने लगे।



स्वामीजी ने खड़े होकर सब को शान्त कर दिया।



जब सब शान्त होकर बैठ गये तब पुलिस कुछ बालकों को पकड़ कर स्वामीजी के सामने ले आई। तब बालक फूट-फूट कर रोने लगे, स्वामीजी ने उन्हें ढाँढ़स बंधा कर उनसे ऐसा कार्य करने का कारण पूछा, तो बालकों ने सारा वृत्तान्त सच-सच बता दिया।



उसके बाद स्वामीजी ने बाजार से लड्डू भगाकर बालकों को दिये। और कहा-



मस्तक श्रृङ्गार या आत्मा श्रृङ्गार

प्रयाग में स्वामीजी के पास नाना प्रकार के तिलक-
धारी लोग बैठे थे। स्वामीजी उन्हें कह रहे थे—

मस्तक श्रृङ्गार करने की अपेक्षा
ईश्वरोपासना द्वारा आत्म-श्रृङ्गार किया
कबो। ऐसे तिलक लगाने से तुम्हारा क्या
लाभ है? आडम्बर बचना महात्माओं
का काम नहीं। श्लोक, महाश्लोक, तिलक
आदि चिह्न बनाने में लोगों की रुचि
रहती है...

...योगाभ्यास
में नहीं। मूर्खों! जितने
समय में तुम यह तिलक लगाते
रहे, उतने समय में गायत्री
क्यों न जप ली?

गुरु सेवा गुरु दक्षिणा

सच्चे गुरु की तलाश करते हुए ३६ वर्ष की उम्र में
दयानन्द की भेंट गुरु विश्वजानन्द से हुई। जब
दयानन्द गुरु के द्वार पर पहुँचे-

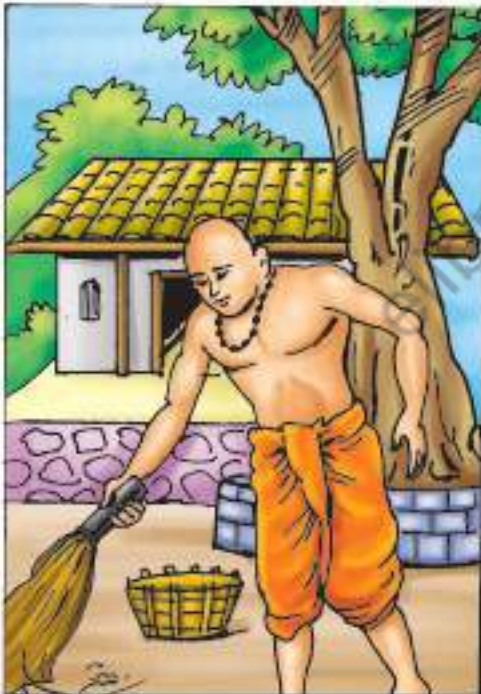
कौन?

मैं यही जानने आया हूँ
कि मैं कौन हूँ? मुझे सत्य
की खोज है। मैंने वेदांत और
योग का अध्ययन किया है
और सावस्वत ग्रंथों से
संस्कृत व्याकरण भी पढ़ा है।
फिर भी मुझे शांति नहीं
मिली।

पहले इन ग्रंथों को यमुना में
फेंक कर मेरे पास आओ।

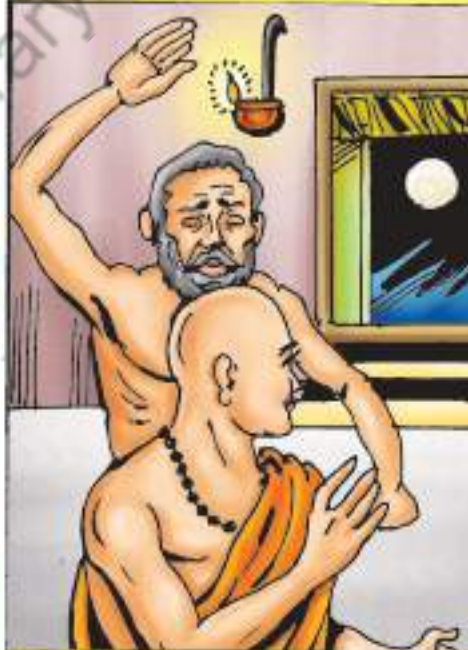
जो आज़ा!

फिर दयानन्द ने
बिना किसी हिचक
के उन ग्रंथों को
यमुना में फेंक
दिया।



एक बार भूमि बुहारते
दयानन्द से कुछ कचरा रह
गया और गुरुजी का पैर
उस कचरे पर पड़ गया...

...गुरुजी नाराज होकर
दयानन्द की माँ से लगे...



...वै बिना बुझ माने गुरु
की माँ सहते रहे।

दयानन्द ने गुरु
के चरणों में
अपना शीश
नवाया और कहा-



गुरुजी! मुझे माँ से
आपकी जो पीड़ा हुई उसके
लिए क्षमा चाहता हूँ।

स्वामी दयानन्द, विरजानन्द के आश्रम में ढाई वर्ष तक रहे। उन दिनों, शिक्षा प्राप्ति के बाद गुरु-दक्षिणा देने की प्रथा थी। विदा होते समय विरजानन्द ने अपने इस होनहार शिष्य से पूछा—

अब तुम पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर चुके हो। दयानन्द! बताओ गुरु दक्षिणा के रूप में मुझे क्या दे रहे हो?

गुरुदेव! गुरु दक्षिणा में देने के लिए मेरे पास केवल यह जवाबी लोंग हैं। इसे ही गुरु-दक्षिणा के रूप में स्वीकार करें।

मैं चाहता हूँ दयानन्द! तुम अपने इस ज्ञान को सब दिशाओं में फैला दो, संसार अज्ञान के अंधकार में डूबा पड़ा है।

मैं अक्षरशः आपके आदेशों का पालन करूँगा गुरुदेव।

गुरु आज्ञा के बाद...

संसार में केवल वेद ही ज्ञान का प्रकाश दे सकते हैं।

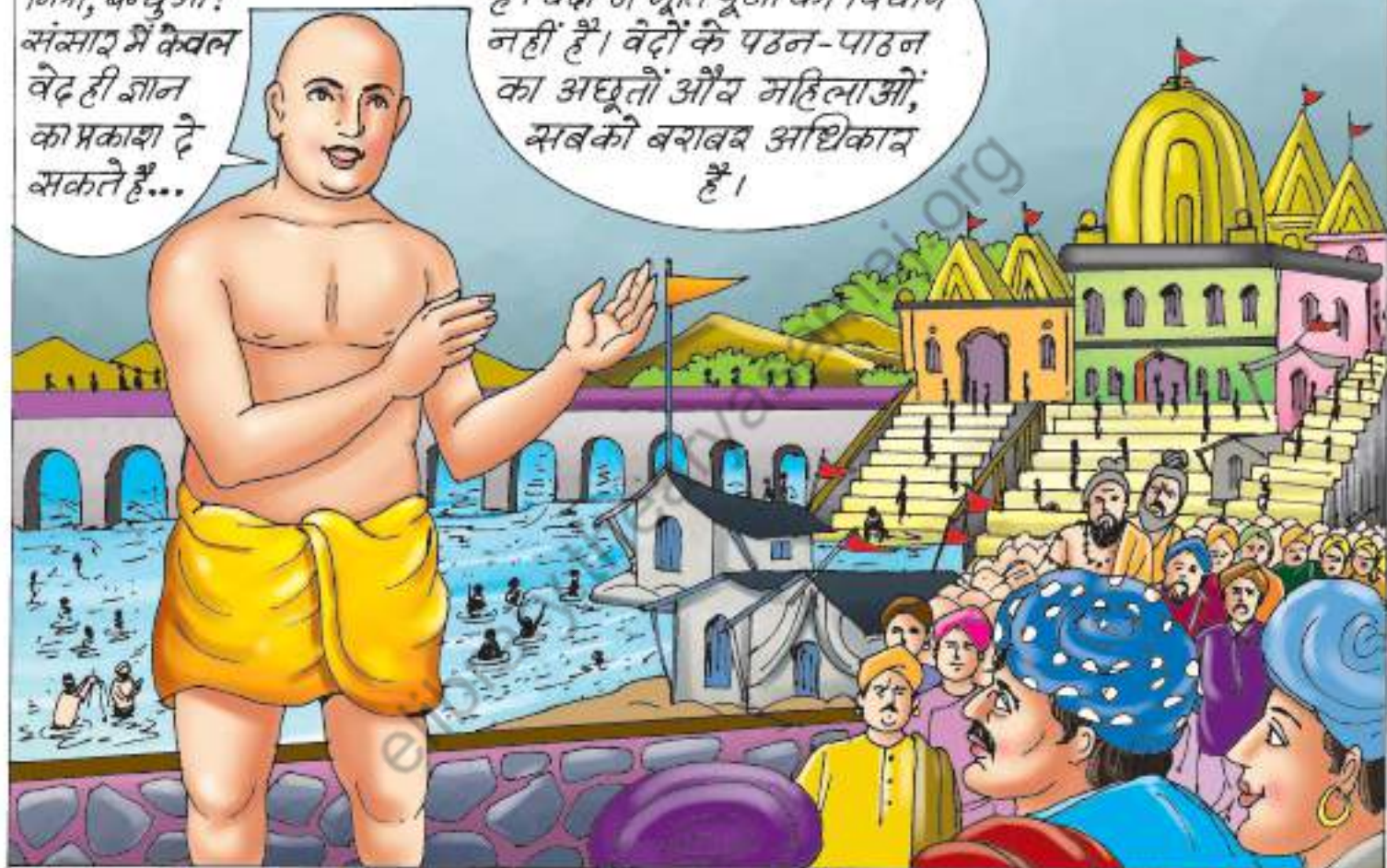
दयानन्द सत्य का प्रकाश करने निकल पड़े।

मूर्ति पूजा पाखण्ड है।

अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद गुरु आज़ादी
दयानन्द हरिद्वार के 'कुंभ मैले' में प्रवचन कर
रहे थे। जब मूर्ति पूजा खण्डन की बात आयी
तो कुछ लोग इस बात से सहमत थे
और कुछ विरोधी भी थे।

मित्रों, बन्धुओं!
संसार में केवल
वेद ही ज्ञान
का प्रकाश दे
सकते हैं...

... मूर्ति पूजा पाखण्ड
है। वेदों में मूर्ति पूजा का विधान
नहीं है। वेदों के पठन-पाठन
का अधूतों और महिलाओं,
सबको बराबर अधिकार
है।



स्वामीजी की बातों
से कुछ लोग
सहमत थे, और
कुछ असहमत थे।

ये पंडे-पुरोहित अपना हित साधने
के लिए तुम्हें अज्ञान के अंधारे
में डबते...

... हैं। उनकी
बातें मत सुनो।



दयानन्द की बातों से असहमत लोग पथराव करने और जारें लगाने लगे।



दयानन्द ने लोगों के सब प्रहार अपनी पृथ्वी जैसी खाती पर सहे। यह देव विरोधी दल के लोग भी हक्के-बक्के रह गये।



जगन्नाथ को क्षमादान

प्रचार हेतु स्वामीजी जौधपुर गये। वहाँ उन्होंने जौधपुर नरेश को नन्हीं नाम की नाचने वाली के साथ देखा तो स्वामीजी विवन्न हो उठे।

इतने बुद्धिमान और समर्थ आदमी के सम्बन्ध एक वैश्या के साथ? छि: छि:!

भला एक राजा का नाचने वाली से कैसा सम्बन्ध?

उसी दिन से नन्हींजान स्वामीजी से बदला लेने की ताक में रहने लगी—

यह फकीर बहुत गड़बड़ कर रहा है, इसका मुँह बन्द करना ही होगा।

स्वामीजी! यह रहा आपका दूध।

अंग्रेजों व नन्हींजान के षड्यन्त्र से रसोइये ने कैंच युक्त दूध में ज़हर मिला कर स्वामीजी को दे दिया। और स्वामीजी पी गये।

स्वामीजी के दूध में जहर मिला कर जगन्नाथ द्वारा पिला देने पर स्वामीजी के पेट में भयंकर दर्द होने लगा। प्रातः काल डॉ. अलीमर्दान खॉन ने इंजेक्शन व अन्य दवाओं के द्वारा स्वामीजी के शरीर में औषध प्रवेश करा दिया।



स्वामीजी के पूरे शरीर से जहर फूटने लगा अंततः रसोइये को अपनी शक्ति महसूस हुई, उसने स्वामीजी के पास जाकर माफ़ी माँगी और कहा—

मुझे क्षमा कर दीजिए, स्वामीजी। मैंने बहुत भयानक पाप किया है, आपके दूध में शीशायुक जहर मिला दिया था।

ये तूने क्या किया: वेद का कार्य अधूरा ही रह गया। जो होना था हो गया, तू अब ये पेन्सा ले और यहाँ से चला जा नहीं तो शजा तुझे मृत्यु दण्ड दे देगा।



मनुष्य की मनुष्यता

एक दिन दो उच्चराज-कर्मचारी स्वामीजी से मिलने उनके निवास स्थान पर आये, और कहने लगे—

स्वामीजी ! श्वण्डन में क्या श्रवण हैं ? इससे तो लोग उत्तेजित होते हैं । हम तो उसी कर्म की अच्छा समझते हैं, जिसमें अपना भला हो । परहित चिन्तन और परोपकार तो ढकोसला है ।

औरम्

स्वामीजी ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया—

अपनी भलाई का काम तो गधे और अन्य पशु पक्षी भी करते हैं । मनुष्य की मनुष्यता तो इसी में है कि दूसरों का उपकार करे ।

स्त्रियों के मुख्य धर्म

एक बार स्वामीजी भंडोच में वाणी द्वारा अमृत वर्षा कर रहे थे। तभी बहुत से भार्गव ब्राह्मण और स्त्रियां स्वामीजी का उपदेश सुनने आए। स्त्रियों में अधिक संख्या अद्वैतानन्द की चेलियों की थी। स्वामीजी स्त्रियों से वार्तालाप करना नहीं चाहते थे, पर उनके विशेष आग्रह पर एक पर्दा अपने और उनके बीच डालकर उन्हें उपदेश दिया—



पति-सेवा करना ही तुम्हारा धर्म है, और पतियों से ही उपदेश लेना तुम्हारा कर्तव्य है। साधु-संन्यासियों के दर्शनों के लिए इधर-उधर घूमना...

... स्त्री जाति के लिए अत्यन्त अनुचित है।

स्वामीजी! ज्ञान और शान्ति कैसे मिले?

लाहौर में एक दिन कुछ स्त्रियाँ स्वामीजी के दर्शन करने आयीं और पूछा—

तुम्हारे पति ही तुम्हारे गुरु हैं। उन्हीं की सेवा करो, किसी साधु को गुरु मत बनाओ। विद्या पदों और अपने पति को...

... हमारे पास भेजा करो। उनके द्वारा हमारे उपदेश से लाभ उठाया करो।

ईसाई और पुनर्जन्म

एक बार स्वामीजी बुधियाना में प्रवचन दे रहे थे। उसी समय दो ईसाई प्रवचन स्थल पर आये और स्वामीजी से पुनर्जन्म होता है या नहीं, उस पर झंझ की।

स्वामीजी ने उन दोनों से एक सवाल किया—

तुम पहले यह बताओ! स्वाना-पीना-सोना आदि देहधारी जीव के लिए सम्भव है या देह रहित जीव के लिए?

स्वामीजी! यह तो केवल देहधारी जीव के लिए ही सम्भव है।

तो तुम मानते हो कि जीव का एक शरीर को छोड़कर दूसरा शरीर धारण करना पुनर्जन्म है।

जी, स्वामीजी!

जो आत्माएँ स्वर्ग में जाकर अनेक भोग भोगेंगी, वह बिना देह धारण किये कैसे भोगेंगी? तो क्या वह उनका पुनर्जन्म न होगा?

दोनों ईसाई अवाक् रह गये।

वेद

ईश्वर—मिलाप का उपाय

एक बार जब स्वामीजी कलकत्ता में थे। वहाँ आदि-ब्रह्म समाज के उपदेशक पं० हैमचन्द्र ने स्वामीजी से एक सवाल किया—

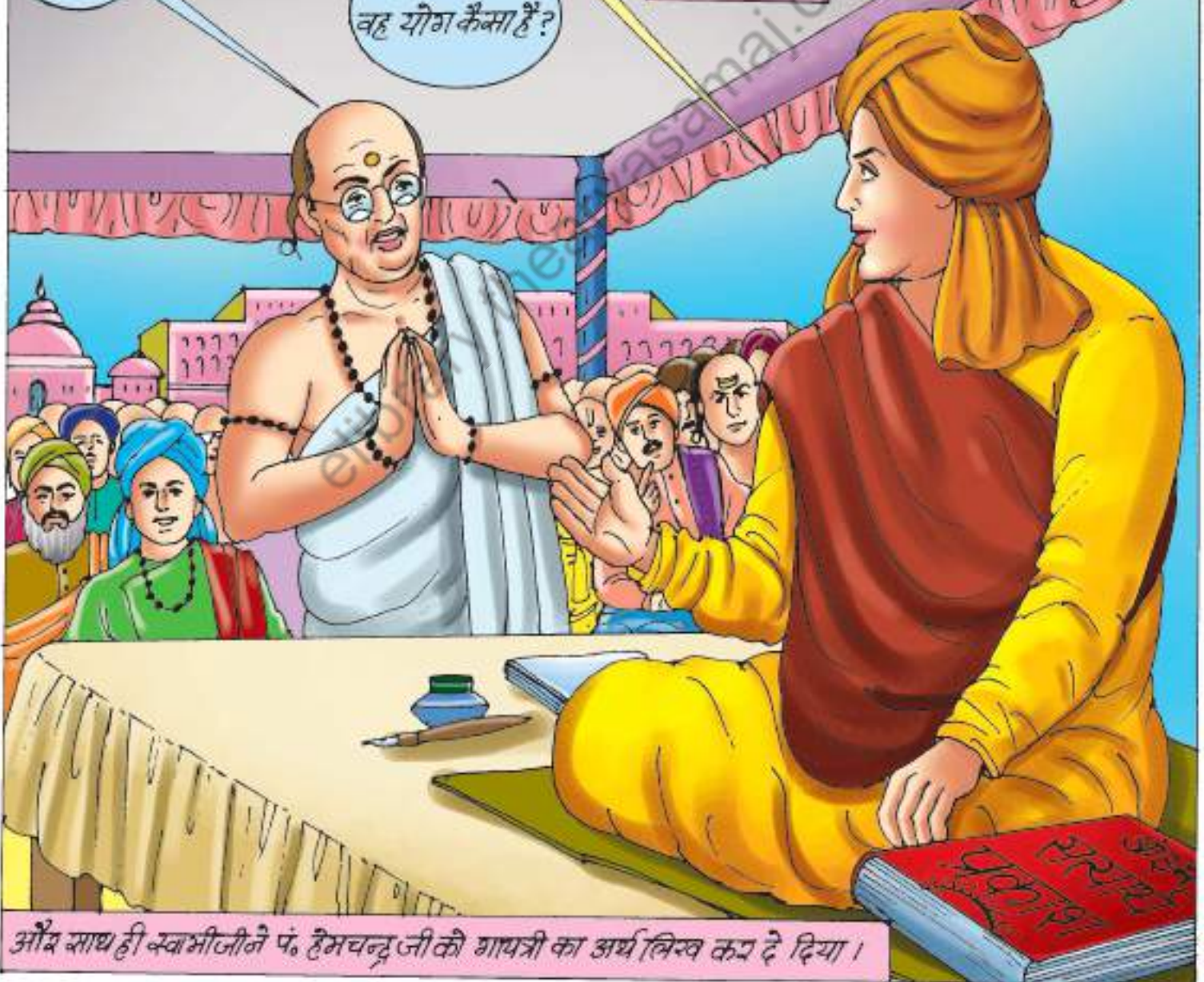
स्वामीजी! ईश्वर से मिलने का क्या उपाय है?

लम्बे समय तक योग करने से ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है।

स्वामीजी! वह योग कैसा है?

इसके उत्तर में स्वामीजी ने अष्टांग योग की व्याख्या करके सुनाई और उपदेश दिया—

तीन घड़ी रात रहें तब उठकर गायत्री का अर्थ सहित ध्यान किया करो। गायत्री मंत्र ही ईश्वर से मिलने की सीढ़ी है।



और साथ ही स्वामीजीने पं० हैमचन्द्र जी की गायत्री का अर्थ लिख कर दे दिया।

हमारे अन्य प्रेरक कॉमिक्स

